उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

RNI-NO-UTTBIL/2007/20700

वर्ष:12 | अंक:166 | देहरादून, सोमवार, 14 जून, 2021 | पृष्ठ:08 | मूल्य:2/रु. प्रति

3 वैक्सीनेशन को लेकर पूर्व सीएम ने कहा, मुस्लिम समुदाय में जागरूकता की कमी

कुपोषण दूर करने में मददगार है मक्का: डॉ एचजी प्रकाश

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एंन सी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है डॉ० एचजी प्रकाश ने कहा कि अधिकतर किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है फसल प्रबंधन के क्रम में डॉ प्रकाश ने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें खरीफ मक्का में खरपतवारो के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं काल करें फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक, शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी.1 लीटर डाईमिथोएट या क्यूनालफास 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफ्यूरान 3% की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेब या मैनकोजेब 75: 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें डॉ० एच जी प्रकाश ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय प्राप्त होगी उन्होंने कहा कि इसमें प्रोटीन 9 से 11: तथा स्टार्च 73 से 75: एवं कार्बोहाइड्रेट 70 से 75: तक पाया जाता है इसके साथ ही मक्का में मिनरल, जिंक, मैग्नीशियम, कापर, आयरन व फास्फोरस एवं कैल्शियम का अच्छा स्रोत है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है मक्का सुपाच्य भोजन भी है कृषि कार्य करते समय कोविड–19 को दृष्टिगत रखते हुए सामाजिक दूरी अवश्य बनाए रखें इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी डॉ अशोक कुमार, डॉ० भानु प्रताप सिंह,डॉ खलील खान, डॉ अरुण कुमार सिंह, डॉ अरविंद कुमार,डॉक्टर चंद्रकला उपस्थित रहे।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 259 कानपुर नगर

अंतरिक्ष में झांकते, तारों से बातें करते थे सुशांत पेज 10

14 जून 2021, सोमवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अनूपपुर निदेशक ने दिए टिप्स;

कुपोषण दूर करने में मददगार है मक्काः डॉ. प्रकाश

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में सोमवार को शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एंड सी परियोजना के अंतर्गत गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया। निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। यूपी में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है।

उन्होंने कहा कि अधिकतर किसान, खरीफ मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते है जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं। इस समय किसान, खरीफ मक्का की बुवाई कर रहे है। उन्होंने कहा कि खरीफ मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी तरह से किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना और 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है जिससे गर्मियों में इसकी कमी को पूरा किया जा सकता है। फसल प्रबंधन के क्रम में डॉ. प्रकाश ने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें। अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। खरीफ मक्का में खरपतवारों के नियंत्रण के लिए

खुरपी की सहायता से निराई कर दें जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है और मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं काल करें। फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमिथोएट या कर्बोसल्फान 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध ना हो तो कार्बोफ्यूरान 3जी की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें। पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेब या मैनकोजेब 75 फीसदी, 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। उन्होंने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए। आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट- पतंगों का प्रकोप कम होता है और किसानों को अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। उन्होंने कहा कि किसान इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय होगी। उन्होंने कहा कि इसमें प्रोटीन 9 से 11 फीसदी तथा स्टार्च 73 से 75 फीसदी और कार्बोहाइड्रेट 70 से 7 फीसदी तक पाया जाता है। इसके साथ ही मक्का में मिनरल, जिंक, मैग्नीशियम, कापर, आयरन, फास्फोरस और कैल्शियम का अच्छा स्रोत है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है। मक्का सुपाच्य भोजन भी है। कृषि कार्य करते समय कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए सामाजिक दूरी अवश्य बनाए रखें। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार, डॉ. भानु प्रताप सिंह, डॉ. खलील खान, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. चंद्रकला यादव मौजूद रहे।

15 june_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

janexpresslive

लखनऊ, मंगलवार, 15 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 241, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

किसानों को खरीफ मक्का के बीजों का किया वितरण

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एंन सी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ.एच.जी. प्रकाश ने कुपोषण दूर करने के लिए 87 किसानों को खरीफ मक्का के बीजों का वितरण किया। उन्होंने बताया कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। उन्होंने कहा है कि खरीफ मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है। उन्होंने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान रखना जरूरी है आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम हो जाता है तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है। मक्का में 9 से 11प्रतिशत प्रोटीन, स्टार्च 73 से 75 प्रतिशत तथा कार्बोहाइड्रेट 70 से 75 प्रतिशत तक पाया जाता है यह मिनरल, जिंक , मैग्नीशियम, कापर, आयरन, फास्फोरस एवं कैल्शियम का अच्छा स्रोत होने के कारण स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार, डॉ. भानु प्रताप सिंह, डॉ. खलील खान, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. चंद्रकला यादव सहित गांव के पुरुष एवं महिला किसान मौजूद रहे।

111 (1).pdf - Read-only

वर्ष : 6, अंक : 73 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, संस्करण
15 जून, 2021
मूल्य ₹ 2.00

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक

www.shashwattimes.com

कुपोषण दूर करने में मददगार है मक्का: डॉ एच जी प्रकाश

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर.सिंह के द्वारा जारी निर्देश के क्रम में सोमवार को विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एंड सी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया। निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है।उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉक्टर एच जी प्रकाश ने कहा कि अधिकतर किसान भाई खरीफ मक्का को बुवाई भुट्टे के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर

अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं। इस समय किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई कर रहे हैं।उन्होंने कहा है कि खरीफ मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है फसल प्रबंधन के क्रम में डॉ प्रकाश ने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। खरीफ मक्का में खरपतवारों के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद खर्च कॉल करें फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्वीनालफास 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध ना हो तो कार्बोफुरान 3ज की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव कर दें । पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेब या मैनकोजेब 75ज 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। डॉक्टर एच जी प्रकाश ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आप प्राप्त होगी उन्होंने कहा कि इसमें प्रोटीन 9 से 11ज तथा स्टार्च 73 से 75ज एवं कार्बोहाइड्रेट 70 से 75ज तक पाया जाता है इसके साथ ही मक्का में मिनरल, जिंक ,मैग्नीशियम, कापर, आयरन,य। फास्फोरस एवं कैल्शियम का अच्छा स्रोत है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है। मक्का सुपाच्य भोजन भी है कृषि कार्य करते समय कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए सामाजिक दूरी अवश्य बनाए रखें। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं गोडल अधिकारी डॉ अशोक कुमार,डॉक्टर भानु प्रताप सिंह,डॉ खलील खान, डॉ अरुण कुमार सिंह,डॉ अरविंद कुमार,डॉक्टर चंद्रकला यादव सहित गांव के सैकड़ों पुरुष एवं महिला किसान उपस्थित रहे।

किसानों को वितरित किये गए मक्का के बीज

लोकभारती न्यूज ब्यूरो
15/06/2021

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एनसी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ एचजी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया। निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉक्टर एचजी प्रकाश ने कहा कि अधिकतर किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक -230
मंगलवार, 15 जून, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, सीतापुर, झांसी और देहरादून से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है

कुपोषण दूर करने में मददगार है मक्का : डॉ. प्रकाश

भास्कर न्यूज़

कानपुर। सीएसए के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एन सी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव समृद्धि गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया। निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मैट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉ. एच जी प्रकाश ने कहा कि अधिकतर किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं। इस समय किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि खरीफ मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना व 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है, इतना ही हरा चारा पशुओं

के लिए मिल जाता है जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है। फसल प्रबंधन के क्रम में डॉ प्रकाश ने बताया कि मक्का की बुवाई की सिंचाई 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद खर पतवार करें फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना भेदक /तना भेदक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमिथोएट या क्लोरपायरीफास 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफ्यूरान 3G की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें। पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेब या मैनकोजेब 75% 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉ. प्रकाश ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय भूमि में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है तो अच्छी आय प्राप्त होगी उन्होंने कहा कि इसमें प्रोटीन 9 से 11% तथा स्टार्च 73 से 75% एवं कार्बोहाइड्रेट 70 से 75% तक पाया जाता है इसके साथ ही मक्का में मिनरल, जिंक, मैग्नीशियम, कापर, आयरन, फास्फोरस व कैल्शियम का अच्छा स्रोत है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है। मक्का सुपाच्य भोजन भी है कृषि कार्य करते समय कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए सामाजिक दूरी अवश्य बनाए रखें।

15 june 2021 satta express.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 241 कानपुर देहात, मंगलवार 15 जून 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

अनूपपुर के 87 किसानों को मिला खरीफ मक्का बीज

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

मैथा कानपुर देहात। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर.सिंह के द्वारा जारी निर्देश के क्रम में दिनांक 14 जून 2021 को विश्वविद्यालय के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कारट एन सी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया। निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6.74 लाख हैक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉ एच.जी. प्रकाश ने कहा कि अधिकतर किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं। इस समय किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि खरीफ मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हैक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है। फसल प्रबंधन के क्रम में डॉ प्रकाश ने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। खरीफ मक्का में खरपतवारों के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में ऑक्सीजन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं काल करें फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमिथोएट या क्लोरपायरीफास 25 ई. सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध ना हो तो कार्बोफ्यूरान 3जी की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें। पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेब या मैनकोजेब 75: 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। और यदि रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। डॉ एच जी प्रकाश ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय प्राप्त होगी उन्होंने कहा कि इसमें प्रोटीन 9 से 11% तथा स्टार्च 73 से 75% एवं कार्बोहाइड्रेट 70 से 75% तक पाया जाता है इसके साथ ही मक्का में मिनरल, जिंक, मैग्नीशियम, कापर, आयरन,व। फास्फोरस एवं कैल्शियम का अच्छा स्रोत है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है। मक्का सुपाच्य भोजन भी है कृषि कार्य करते समय कोविड–19 को दृष्टिगत रखते हुए सामाजिक दूरी अवश्य बनाए रखें। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी डॉ अशोक कुमार,डॉ भानु प्रताप सिंह,डॉ खलील खान, डॉ अरुण कुमार सिंह,डॉ अरविंद कुमार,डॉ चंद्रकला यादव सहित गांव के सैकड़ों पुरुष एवं महिला किसान उपस्थित रहे।

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर देहात। सीएसए अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ.अरविंद कुमार ने किसानों को बताया कि मृदा उर्वरता का संतुलन इस प्रकार किया जाए कि फसल की मांग एवं आवश्यकता के अनुसार पौधे को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध होते रहें। जिससे अधिक से अधिक उपज मिल सके और मृदा स्वास्थ्य सुरक्षित बना रहे। इसके लिए आवश्यकतानुसार अकार्बनिक एवं कार्बनिक स्रोतों से फसल को सभी तत्वों का निश्चित अनुपात में प्रदान करना आवश्यक है। क्योंकि प्रत्येक तत्व का पौधों के अंदर अलग अलग कार्य एवं महत्व है जो विभिन्न अवस्थाओं में पूर्ण होता है। कोई एक तत्व दूसरे तत्व का पूरक नहीं है। यह संतुलन बिगड़ने पर उत्पादन सीधे प्रभावित होता है। इस तकनीकी को एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन की संज्ञा दी गई है। एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के घटक 1. जैविक खाद 2.फसल अवशेष 3. जीवाणु खाद 4. रासायनिक खाद कृषि में एकीकृत तत्व प्रबंधन से लाभ 1. अधिक पैदावार प्राप्त करना। 2.पोषक तत्वों को बर्बादी से बचाना। 3. निक्षालन तथा प्रतिक्रियाओं से बचाना किसी एक तत्व की अधिकता भी विषैलापन पैदा करती है। 4. मृदा की उत्पादकता एवं स्वास्थ्य बनाए रखना। 5. गुणात्मक उत्पादन। 6. वातावरण की विपरीत परिस्थितियों से बचाव। 7. कीड़े मकोड़ों के प्रभाव को प्राकृतिक तौर पर कम करना। 8 लाभ-लागत अनुपात में वृद्धि। एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन हेतु कुछ सुझाव 1.मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही उर्वरकों एवं जैविक खादों का प्रयोग करें। 2.दलहनी फसलों में राइजोबियम कल्चर का प्रयोग अवश्य करें। 3. धान व गेहूं के फसल चक्र में ढैंचा की हरी खाद का प्रयोग करें। 4. फसल चक्र में परिवर्तन करें। 5. आवश्यकतानुसार उपलब्धता के आधार पर गोबर तथा कूड़ा करकट का प्रयोग कर कंपोस्ट बनाई जाए। 6. खेत में फसलावशेष ,जैविक पदार्थों को मिट्टी में मिला दिया जाए। 7. कार्बनिक पदार्थ तथा अकार्बनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करें।

खरीदारी बढ़ेगी तो घटेगी महंगाई

आलोक जोशी, वरिष्ठ

...बाकी कुछ बचा तो महंगाई मार गई। सन1974 में आई सुपरहिट फिल्म रोटी कपड़ा और मकान का यह गाना आज के हाल पर एकदम

कुपोषण दूर करने में मददगार है मक्का : डॉ. प्रकाश

15/06/2021 सांध्य समाचार

कानपुर (संवाददाता)। सीएसए के शोध निदेशालय के अंतर्गत संचालित कास्ट एंन सी परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने उपस्थित वैज्ञानिकों के साथ गांव के लोगों में कुपोषण दूर करने के लिए खरीफ मक्का के बीजों को 87 किसानों को वितरण किया गया। निदेशक शोध ने कहा है कि खरीफ की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है।उत्तर प्रदेश में खरीफ मक्का का क्षेत्रफल लगभग 6. 74 लाख हेक्टेयर है तथा उत्पादन 13.92 लाख मीट्रिक टन है जबकि औसत उत्पादकता 20.67 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉ. एच जी प्रकाश ने कहा कि अधिकतर किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिस बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं। इस समय किसान भाई खरीफ मक्का की बुवाई कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि खरीफ मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना व 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है, इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है। फसल प्रबंधन के क्रम में डॉ प्रकाश ने बताया कि मक्का की बुवाई की सिंचाई 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक धशिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध ना हो तो कार्बोफयूरान 3ळ की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें। पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेव या मैनकोजेब 75: 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉ. प्रकाश ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है तो अच्छी आय प्राप्त होगी उन्होंने कहा कि इसमें प्रोटीन 9 से 11: तथा स्टार्च 73 से 75: एवं कार्बोहाइड्रेट 70 से 75: तक पाया जाता है इसके साथ ही मक्का में मिनरल, जिंक, मैग्नीशियम, कापर, आयरन, फास्फोरस व कैल्शियम का अच्छा स्रोत है जो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभकारी है। मक्का सुपाच्य भोजन भी है कृषि कार्य करते समय कोविड–19 को दृष्टिगत रखते हुए सामाजिक दूरी अवश्य बनाए रखें। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी डॉ. अशोक कुमार,डॉ. भानु प्रताप सिंह, डॉ खलील खान, डॉ अरुण कुमार सिंह, डॉ अरविंद कुमार, डॉ. चंद्रकला यादव सहित गांव के सैकड़ों पुरुष एवं महिला किसान उपस्थित रहे।